शिक्षण अभिवृत्ति/अभिक्षमता (Teaching Aptitude)

भाग I : शिक्षण : प्रकृति, उद्देश्य, विशेषताएँ और आधारभूत आवश्यकताएँ (Teaching : Nature, Objectives, Characteristics and Basic Requirements)

शिक्षण का अर्थ (Meaning of Teaching)

शिक्षण मानवीय मूल्यों के विकास पर बल देता है, क्योंकि यह एक सामाजिक प्रक्रिया है। शिक्षण में सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व शिक्षक और विद्यार्थी के मध्य **'प्रत्यक्ष वार्तालाप'** होता है। शिक्षण कोई मौलिक अवधारणा नहीं है, क्योंकि यह सामाजिक व मानवीय कारकों से गतिशील एवं प्रभावित होता है। इस प्रक्रिया के अंतर्गत हम औपचारिक एवं अनौपचारिक रूप से सीखने के अनुभवों को विस्तार देते हैं। शिक्षण को हमारे समाज में बदलाव लाने के लिये एक 'विद्यालयी उपकरण' कहा जाता है।

वर्तमान शैक्षिक परिवेश में शिक्षण का उद्देश्य सिर्फ रटना या बलपूर्वक ज्ञान को मस्तिष्क में बिठाना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में अधिगम करके सीखने की गतिशीलता लाना भी है।

शिक्षण के मुख्यत: तीन पक्ष होते हैं, जो एक-दूसरे से घनिष्ठता के साथ जुड़े रहते हैं।

ये तीन पक्ष हैं- **शिक्षक, विद्यार्थी व पाठ्यक्रम**। शिक्षण के द्वारा ही विद्यार्थी नवीन ज्ञान अर्जित करने में सफल होता है।

- **क्लार्क :** "विद्यार्थी के व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिये दी जाने वाली क्रिया शिक्षण है।"
- **बी.ओ. स्मिथ :** "अधिगम को अभिप्रेरित करने वाली क्रिया शिक्षण है।"
- **एन.एल. पेज :** "शिक्षण कला व विज्ञान दोनों है।"
  - **कला :** अनुभवों पर आधारित है।
  - **विज्ञान :** इसमें क्रमबद्धता पाई जाती है।

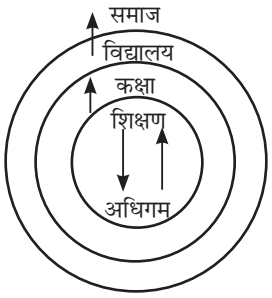

शिक्षण की अवधारणा (Concept of Teaching)

- शिक्षण की संपूर्ण प्रक्रिया एक त्रिस्तरीय पद्धति होती है जिसके तीन घटक (शिक्षक, विद्यार्थी एवं पाठ्यक्रम) होते हैं। शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक दूसरों को पढ़ाते (teach) हैं, प्रशिक्षित (Trained) करते हैं या उन्हें अनुदेश (Instruct) देते हैं। ये सभी उन प्रक्रियाओं को संदर्भित करते हैं जो पढ़ाए जा रहे लोगों की संज्ञानात्मक संरचना (किसी के मस्तिष्क में ज्ञान की संरचना) में बदलाव लाने के लिये निष्पादित होती हैं। हालाँकि पढ़ाना, प्रशिक्षण और अनुदेशन अपने अर्थ में काफी भिन्न हैं।
- प्रशिक्षण में किसी व्यक्ति को किसी विशेष कार्य को करने के लिये तैयार करने की प्रक्रिया शामिल होती है। यह सीखने की प्रक्रिया का वर्णन करता है जिसे पूरा करने में कई साल लगते हैं। प्रशिक्षण में अपेक्षाकृत एक व्यवस्थित माध्यम से ज्ञान और कौशल से युक्त कोई व्यक्ति ज्ञान और कौशल को अन्य व्यक्तियों में हस्तांतरित करता है जो इसे नहीं जानते हैं।
- अनुदेशन को अक्सर शिक्षण के पर्याय के रूप में उपयोग किया जाता है, लेकिन व्यापक अर्थ में इसका संबंध शिक्षा की बजाय कौशल के विकास से ज़्यादा होता है।
- प्रशिक्षण और अनुदेशन के विपरीत, शिक्षण ऐसी प्रक्रिया को संदर्भित करता है जो किसी व्यक्ति-विशेष के सर्वांगीण विकास हेतु उसको उसकी पूर्ण क्षमता तक पहुँचने में मदद करता है।
- शिक्षण प्रक्रिया में विद्यार्थियों का शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास शामिल होता है। शिक्षण विद्यार्थियों में परिवर्तन को बढ़ावा देने वाले प्रयासों की एक प्रक्रिया है। हालाँकि प्रशिक्षण, अनुदेशन और शिक्षण अर्थों में भिन्न होते हैं, लेकिन इन सभी के माध्यम से एक केंद्रीय प्रक्रिया के रूप में विद्यार्थियों में अधिगम संपन्न होता है।
- शिक्षण प्रक्रिया सार्थक तभी होगी जब शिक्षक इस आशय से शिक्षण गतिविधि में शामिल हो कि विद्यार्थी इसके परिणामस्वरूप कुछ सीखेंगे।
- शिक्षण की प्रक्रिया तब भी संपन्न होती है जब कुछ शैक्षणिक गतिविधियों द्वारा शिक्षक अपने विद्यार्थियों को सीखने के उद्देश्य से संलग्न करता है, जैसे किसी गद्यांश को पढ़ना, विद्यार्थियों के लिये रचना लिखना आदि।

शिक्षण की प्रकृति (Nature of Teaching)

शिक्षण एक व्यापक प्रक्रिया है जो विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक पक्षों को अभिप्रेरित करती है। शिक्षण में शिक्षक की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। शिक्षण प्रक्रिया का गहन विश्लेषण करने पर शिक्षण की प्रकृति का बोध होता है। शिक्षण की प्रकृति का विश्लेषण अथवा व्याख्या निम्नलिखित रूपों में की जा सकती है-

- **शिक्षण एक त्रिध्रुवीय प्रक्रिया है (Teaching is a Tripolar Process):** शिक्षा मनोवैज्ञानिक रायबर्न ने शिक्षण को त्रिध्रुवीय प्रक्रिया माना है। रायबर्न के अनुसार विद्यार्थी, शिक्षक और पाठ्यचर्चा शिक्षण के तीन ध्रुव हैं। बी.एस. ब्लूम के अनुसार शिक्षण के तीन पक्ष- शिक्षण उद्देश्य, सीखने के अनुभव और व्यवहार परिवर्तन होते हैं।
- **शिक्षण कला तथा विज्ञान दोनों है (Teaching is a Science as well as an Art):** शिक्षा मनोवैज्ञानिक एन.एल. पेज के अनुसार शिक्षण कला व विज्ञान दोनों है। शिक्षण अनुभवों पर आधारित है इसलिये कला है। शिक्षण में नियोजन, मूल्यांकन तथा क्रमबद्धता का समावेश रहता है। यह तथ्य इसके वैज्ञानिक पक्ष के महत्त्व को दर्शाता है।
- **शिक्षण अंत:प्रक्रिया है (Teaching is an Inter-Active Process):** शिक्षण में सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व शिक्षक और विद्यार्थी के मध्य प्रत्यक्ष वार्तालाप होता है।
- **शिक्षण निर्देशन की प्रक्रिया है (Teaching is the Process of Directing):** शिक्षण निर्देशन के 6E + S प्रारूप पर आधारित होता है। यह प्रारूप विभिन्न शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों के साथ परामर्श के पश्चात् विकसित किया गया। शिक्षण के '6E + S' प्रारूप निम्नलिखित हैं-
  - संलग्नता (Engage)
  - अन्वेषण (Explore)
  - व्याख्या (Explain)
  - विस्तृत (Elaborate)
  - मूल्यांकन (Evaluate)
  - विस्तार (Extend)
  - मानक (Standard)
- **शिक्षण सामाजिक तथा व्यावसायिक प्रक्रिया है (Teaching is a Social and Professional Process):** शिक्षण एक सामाजिक प्रक्रिया है। इसके माध्यम से समाज की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है। शिक्षण एक व्यावसायिक प्रक्रिया भी है। इसे व्यक्ति द्वारा अपनी आजीविका का साधन बनाया जाता है।
- **शिक्षण सोद्देश्य प्रक्रिया है (Teaching is an Intentional Process):** किसी न किसी विशिष्ट उद्देश्य की प्राप्ति के लिये शिक्षण की विभिन्न क्रियाओं का आयोजन किया जाता है।
- **शिक्षण विकासात्मक प्रक्रिया है (Teaching is a Process of Development):** शिक्षण प्रक्रिया के द्वारा विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास किया जाता है। विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक पक्षों का विकास करके उनके व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाया जाता है।
- **शिक्षण तार्किक प्रक्रिया है (Teaching is a Logical Process):** विद्यार्थियों की विषयवस्तु तथा पाठ्यचर्चा का विश्लेषण तार्किक आधार पर ही किया जाता है।
- **शिक्षण औपचारिक के साथ-साथ अनौपचारिक प्रक्रिया भी है (Teaching is both Formal and Informal Process):** शिक्षण प्रक्रिया को बेहतर और सारगर्भित बनाने के उद्देश्य से विद्यालय में और विद्यालय के बाहर शिक्षा कार्यक्रम संचालित किये जाते हैं।
- **शिक्षण उपचारात्मक प्रक्रिया है (Teaching is a Therapeutic Process):** शिक्षण प्रक्रिया में विद्यार्थियों की कठिनाइयों का सामूहिक रूप से निवारण किया जाता है। शिक्षक और विद्यार्थी परस्पर निर्णय करके उचित शिक्षण युक्तियों का प्रयोग करते हैं।
- **शिक्षण भाषाई प्रक्रिया है (Teaching is a Linguistic Process):** शिक्षण में संकल्पनाओं, तथ्यों, सिद्धांतों तथा सामान्यीकरण का बोध भाषा के प्रयोग द्वारा ही संभव होता है। शिक्षण प्रक्रिया में भाषा, शिक्षक और विद्यार्थी के मध्य सेतु का कार्य करती है।
- **शिक्षण सतत प्रक्रिया है (Teaching is a Continuous Process):** शिक्षण एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। विद्यार्थी जीवनभर नए कौशल, ज्ञान, क्षमताओं तथा अपने अनुभवों से कुछ न कुछ सीखता रहता है।

शिक्षण के उद्देश्य (Objectives of Teaching)

- सामाजिक व मानवीय मूल्यों को विकसित करना
- शारीरिक व मानसिक विकास
- आध्यात्मिक व नैतिक विकास
- परिस्थिति से अनुकूलन
- शिक्षक के साथ-साथ सहपाठियों व विद्यालयी वातावरण के साथ सहभागिता
- जीवन को पूर्णता व व्यापकता प्रदान करना
- जीविकोपार्जन
- ज्ञान की संवृद्धि
- बौद्धिक व चरित्र निर्माण
- आपसी सहयोग व भ्रातृत्व की भावना का विकास

शिक्षण की विशेषताएँ (Characteristics of Teaching)

- प्रगतिशीलता
- विद्यार्थी-शिक्षक सहयोग
- विद्यार्थी-क्रियाशीलता की उपस्थिति
- संवेगात्मक स्थिरता की उपस्थिति
- प्रभावी नियोजन
- लोकतांत्रिक आदर्शों के अनुकूल
- उत्तम विधियों पर आधारित
- प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष कक्षा व्यवहार
- सहानुभूति एवं दया पर आधारित
- निर्देशात्मकता
- विद्यार्थी-शिक्षक घनिष्ठ संबंध
- निदानात्मक
- विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान का उपयोग
- अपेक्षित सूचनाओं का आदान-प्रदान शिक्षक, दार्शनिक एवं मित्र की भूमिका में

शिक्षण के प्रकार (Types of Teaching)

शिक्षण को विभिन्न आधारों पर वर्गीकृत किया गया है। प्रत्येक आधार पर शिक्षण के तीन प्रकार हैं-

❖ 641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, नई दिल्ली
❖ 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली
❖ C-171/2, ब्लॉक-A, सेक्टर-15, नोएडा, उत्तर प्रदेश-201301
❖ ताशकंद मार्ग, निकट-पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज
❖ मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर, राजस्थान
❖ 47/CC, बलिंगटन आर्केड मॉल, बलिंगटन चौराहा, विधानसभा मार्ग, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
❖ 12, मेन AB रोड, भँवर कुआँ, इंदौर, मध्य प्रदेश

शासन व्यवस्था के आधार पर (On the Basis of Governance)

- **निरंकुश शिक्षण:** शिक्षण प्रक्रिया का संचालन शासक की इच्छा के अधीन होता है, जैसे- प्राचीन राजतंत्र में शिक्षा का संचालन।
- **लोकतांत्रिक प्रणाली का शिक्षण:** इस व्यवस्था के अंतर्गत शिक्षण प्रक्रिया का संचालन जनता की इच्छा के अनुसार करना होता है, जो कि व्यावहारिक न होने के कारण संभव नहीं है।
- **हस्तक्षेप रहित शिक्षण:** शासन व्यवस्था की ओर से शिक्षण के विभिन्न स्वरूपों का निर्धारण कर दिया जाता है। विद्यार्थी किसी भी स्वरूप में अध्ययन करने के लिये स्वतंत्र होता है, जैसे- भारतीय शिक्षा पद्धति।

अधिगम स्तर के आधार पर (On the Basis of Learning Level)

- **स्मृति स्तर पर शिक्षण:** एक मानसिक प्रक्रिया है, जो अधिगम, धारणा, प्रत्यास्मरण व प्रत्याभिज्ञान आदि चरणों से मिलकर पूर्ण होती है। इसमें प्रस्तुतीकरण के क्रम में महत्त्वपूर्ण बिंदुओं को दर्ज किया जाता है। इस स्तर के शिक्षण में विद्यार्थी अधिगम की विषयवस्तु को रटने तक सीमित रखता है, उसे समझा नहीं सकता।
- **अवबोध स्तर का शिक्षण:** इस प्रकार के शिक्षण का प्रयोग किसी वस्तु की पहचान या उसकी प्रकृति को समझने में करता है। साथ ही उदाहरण ों को गैर-उदाहरणों से अलग करने की समझ विकसित होती है।
- **विमर्शी स्तर का शिक्षण:** विमर्श एक मानसिक प्रक्रिया होती है। अत: इस शिक्षण के अंतर्गत विवेच्य बिंदुओं का आलोचनात्मक विश्लेषण करने व उन पर विचार देने की समझ विकसित होती है। इस प्रकार का शिक्षण समस्या का समाधान प्रस्तुत करता है। इस प्रकार संज्ञानात्मक अंतर्विनिमय के इन तीनों स्तर पर विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक आयाम का विकास होता है।

शैक्षणिक प्रबंधन व्यवस्था के आधार पर (On the Basis of Educational Management System)

- **औपचारिक शिक्षण:** इस प्रकार के शिक्षण में कुछ बाध्यकारी नियम होते हैं, जिनका पालन करना आवश्यक माना जाता है, जैसे- स्थान, समय, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि इत्यादि से संबद्ध नियम। औपचारिक शिक्षण की संपूर्ण व्यवस्था पूर्व नियोजित होती है। इसका मुख्य उद्देश्य डिग्री या व्यवसाय अर्जन करना होता है।
- **अनौपचारिक शिक्षण:** इस प्रकार का शिक्षण समस्त बाध्यताओं से मुक्त होता है। अत: यह औपचारिक शिक्षण के विपरीत होता है, जैसे- प्रौढ़ शिक्षा (Adult Education)।
- **निरौपचारिक शिक्षण:** इस प्रकार के शिक्षण में औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षण की मिश्रित विशेषताएँ पाई जाती हैं। इसमें कुछ बाध्यताएँ एवं कुछ स्वतंत्रताएँ सम्मिलित रहती हैं, जैसे- दूरस्थ शिक्षा या पत्राचार के माध्यम से डिग्री प्राप्त करने (उद्देश्यों का पूर्व ज्ञान होना) जैसी औपचारिक शिक्षण की विशेषताओं सहित स्थान व समय से मुक्ति जैसी अनौपचारिक शिक्षण की विशेषताओं का एक साथ होना।

उद्देश्यों के आधार पर (On the Basis of Objectives)

सर्वप्रथम बी.एस. ब्लूम ने अपनी पुस्तक 'शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण' (The Taxonomy of Educational Objectives) में शिक्षण का उद्देश्य आधारित वर्गीकरण प्रस्तुत किया। इसके निम्न तीन रूप हैं-

- **ज्ञानात्मक शिक्षण (Cognitive Teaching):** इस शिक्षण से ज्ञानात्मक उद्देश्यों की पूर्ति 6 चरणों में होती है- ज्ञान, अवबोध, प्रयोग, विश्लेषण, संश्लेषण एवं मूल्यांकन।
- **भावात्मक शिक्षण (Affective Teaching):** इस शिक्षण का संबंध चरित्र निर्माण से होता है। इस शिक्षण के उद्देश्यों की पूर्ति भी 6 चरणों में होती है- ग्रहण, अनुक्रिया, अनुमूल्यन, संकल्पना, संगठन एवं चरित्र निर्माण।
- **मनोगत्यात्मक शिक्षण (Psychomotor Teaching):** इस शिक्षण का संबंध मस्तिष्क व शरीर दोनों से होता है। इस शिक्षण के विकास को 6 चरणों में पूरा किया जाता है- उद्दीपन, कार्यकरण, नियंत्रण, समायोजन, स्वभावीकरण एवं आदत निर्माण।

शिक्षण स्वरूप के आधार पर (On the Basis of the Nature of Education)

- वर्णनात्मक (Descriptive)
- निदानात्मक (Diagnostic)
- उपचारात्मक (Therapeutic)

क्रियाओं के आधार पर (On the Basis of Actions)

- प्रस्तुतीकरण (Presentation)
- प्रदर्शन (Performance)
- क्रिया (Action)

शिक्षण के सिद्धांत (Principles of Teaching)

जेरोम ब्रूनर ने वर्ष 1963 में शिक्षण सिद्धांत का सर्वप्रथम प्रयोग किया। शिक्षण सिद्धांत में बहुत से तर्क वाक्यों का एक समूह होता है, जिससे एक ओर शिक्षा के परिणामों तथा दूसरी ओर विद्यार्थी की विशेषताओं के पारस्परिक संबंधों को स्पष्ट किया जाता है। शिक्षण सिद्धांत की सहायता से ही अधिगम का मूल्यांकन किया जा सकता है।

शिक्षण सिद्धांत के विभिन्न चरण, जो शिक्षक द्वारा प्रयोग किये जाते हैं, नीचे प्रस्तुत हैं–

- अभिप्रेरणा का सिद्धांत
- उद्देश्यों के निर्धारण का सिद्धांत
- रुचि का सिद्धांत
- अभ्यास/पुनरावृत्ति का सिद्धांत
- समन्वय का सिद्धांत
- मनोरंजन का सिद्धांत
- स्तरानुकूल शिक्षण का सिद्धांत
- साहचर्य का सिद्धांत

शिक्षण के सूत्र (Teaching Formula)

शिक्षण प्रक्रिया में कक्षा में प्रभावी संप्रेषण के लिये एक शिक्षक को शिक्षण सूत्रों का ज्ञान होना अनिवार्य है। शिक्षण सूत्र शिक्षक पर आधारित होते हैं। शिक्षण सूत्र को निम्न रूपों में समझा जा सकता है-

- **पूर्ण से अंश की ओर:** यह शिक्षण सूत्र विषयवस्तु के संपूर्ण ढाँचे की आधारभूत जानकारी देने के बाद ही उसके अंशों पर शिक्षण को स्वीकार करता है।
- **प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर:** इसके अंतर्गत अप्रत्यक्ष विषयवस्तु की जानकारी के लिये स्थानीय वातावरण के प्रत्यक्ष उदाहरणों से अधिगम करवाने पर बल दिया जाता है।
- **स्थूल से सूक्ष्म की ओर (मूर्त से अमूर्त की ओर):** अधिगम को 'इंद्रियों की अनुभूति' पर आधारित करने पर बल देता है।
- **विश्लेषण से संश्लेषण की ओर:** विषयवस्तु को पहले इकाइयों में अधिगम करवाया जाता है। इसके बाद सामूहिक अधिगम करवाने पर बल दिया जाता है।
- **ज्ञात से अज्ञात की ओर:** शिक्षण को पहले ज्ञात विषयवस्तु से जोड़ते हैं, फिर अज्ञात की और बढ़ते हैं।
- **सरल से जटिल/कठिन की ओर:** अधिगम का आधारभूत सूत्र है कि विद्यार्थी पहले सरल बातों को समझता है, फिर कठिन बातों को। कुछ अन्य शिक्षण सूत्रों का प्रयोग भी शिक्षकों द्वारा किया जाता है।

शिक्षण की अवस्थाएँ या क्रियाएँ (Phases of Teaching)

शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को विद्यालय में विभिन्न क्रियाओं के माध्यम से अधिगम कार्य पूर्ण कराया जाता है। शिक्षण में इन क्रियाओं की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। शिक्षण की अवस्थाओं या क्रियाओं के अंतर्गत इनके तीन सोपान हैं-

- **पूर्व तत्परता अवस्था (Pre-Active Phase):** इस अवस्था में शिक्षण कार्य से संबंधित समस्त नियोजन शामिल किये जाते हैं। इसके प्रमुख सोपान निम्नलिखित हैं-
  - शिक्षण के उद्देश्यों का निर्धारण करना
  - पाठ्यक्रम या पाठ्यवस्तु का निर्धारण करना
  - शिक्षण विधियों का नियोजन करना
  - प्रस्तुतीकरण के लिये क्रमबद्ध व्यवस्था करना
  - किसी विशेष पाठ्यवस्तु या प्रकरण के लिये युक्तियों का विकास करना
  - मूल्यांकन की पद्धतियों का निर्धारण करना।
- **अंत:प्रक्रिया अवस्था (Inter-Active Phase):** शिक्षण की इस अवस्था में जो समस्त कार्य अथवा गतिविधियाँ प्रत्यक्षत: शिक्षक तथा विद्यार्थियों के मध्य संप्रेषित या घटित होती हैं, वे सभी इसी अवस्था का अंग होती हैं। इस अवस्था के अंतर्गत निम्नलिखित पद हैं-
  - विद्यार्थियों का निदान
  - क्रिया एवं प्रतिक्रिया
    - उद्दीपकों का चयन
    - उद्दीपकों का प्रस्तुतीकरण
    - युक्तियों का प्रयोग
    - युक्तियों का विस्तार
  - कक्षा के आकार-प्रकार की अनुभूतियाँ।
- **तत्परता के बाद की अवस्था (Post-Active Phase):** इस अवस्था का मूल्यांकन से संबंध होता है। मूल्यांकन के अभाव में शिक्षण उद्देश्यपूर्ण नहीं होता। किसी कार्य के लिये निर्धारित उद्देश्यों को किस हद तक हासिल या प्राप्त किया गया है, यह हमें मूल्यांकन से ही ज्ञात होता है। इस अवस्था में निम्नलिखित क्रियाएँ निहित होती हैं-
  - शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति
  - समुचित मूल्यांकन विधियों का चयन
  - शिक्षण द्वारा व्यवहार में परिवर्तन
  - मूल्यांकन के आधार पर शिक्षण की विभिन्न क्रियाओं के संदर्भ में निर्णय।

अभिप्रेरणा की शक्तियाँ (Motivation Powers)

किसी भी व्यक्ति के व्यवहार में स्थायित्व लाने का कार्य अभिप्रेरणा (Motivation) के द्वारा ही होता है। अभिप्रेरणा के बिना अधिगम संभव नहीं है। अभिप्रेरणा के माध्यम से ही शिक्षक विद्यार्थियों के व्यवहार को नियंत्रित करता है। साथ ही शिक्षण को प्रभावशाली बनाकर उनके लक्ष्य की प्राप्ति में सहायता करता है।

अभिप्रेरणा के दो रूप होते हैं, जो शिक्षण कार्य में बहुत उपयोगी हैं-

- बाह्य अभिप्रेरणा (External Motivation)
- आंतरिक अभिप्रेरणा (Internal Motivation)

छोटी कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिये बाह्य अभिप्रेरणा प्रभावी होती है, जबकि बड़ी कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिये बाह्य एवं आंतरिक दोनों प्रकार की अभिप्रेरणाएँ कार्य करती हैं। व्यवहार परिवर्तन में वातावरण की भूमिका भी प्रभावी सिद्ध होती है। अत: शिक्षण के दौरान कक्षा का वातावरण इस प्रकार तैयार किया जाना चाहिये कि विद्यार्थी अपेक्षित अनुक्रियाएँ संपन्न करने के साथ-साथ अपने उद्देश्य हेतु प्रतिबद्ध भी हों।

मनोविज्ञान के अनुसार आंतरिक अभिप्रेरणा, बाह्य अभिप्रेरणा से अधिक प्रभावी होती है, क्योंकि आंतरिक अभिप्रेरणा द्वारा व्यवहार में स्थायी परिवर्तन होता है। इसलिये शिक्षण कार्य कराते समय आंतरिक अभिप्रेरणा प्रदान करने हेतु शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों की प्रशंसा की जानी चाहिये।

अभिप्रेरणा का शैक्षिक महत्त्व (Educational Importance of Motivation)

- अधिगम के लिये प्रोत्साहन हेतु
- व्यवहार में परिवर्तन हेतु
- अधिकाधिक ज्ञानार्जन हेतु
- अनुशासन विकसित करने हेतु
- मार्गदर्शन हेतु
- सामाजिक व चारित्रिक गुणों हेतु
- उच्च आकांक्षा हेतु

❖ 641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, नई दिल्ली
❖ 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली
❖ C-171/2, ब्लॉक-A, सेक्टर-15, नोएडा, उत्तर प्रदेश-201301
❖ ताशकंद मार्ग, निकट-पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज
❖ मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर, राजस्थान
❖ 47/CC, बलिंगटन आर्केड मॉल, बलिंगटन चौराहा, विधानसभा मार्ग, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
❖ 12, मेन AB रोड, भँवर कुआँ, इंदौर, मध्य प्रदेश

अधिगम की परिस्थितियाँ (Learning Conditions)

शिक्षण प्रक्रिया में अधिगम अर्थात् सीखने की तुलना में अधिगम की परिस्थितियाँ अधिक उपयोगी हैं। **रॉबर्ट गेने** ने अपनी पुस्तक 'The Conditions of Learning' में अधिगम की निम्न आठ दशाओं/भेदों के बारे में लिखा है। ये दशाएँ कठिनाइयों के स्तर के क्रम में रखी गई हैं। ऊपर से नीचे जाने पर कठिनाइयों का स्तर बढ़ता जाता है।

- **संकेत अधिगम (Signal Learning):** यह **पावलव** की शास्त्रीय अनुबंध क्रिया पर आधारित है। इसके अंतर्गत संकेत मात्र से ही अधिगम कराया जाता है। इसमें प्राणी एक संकेत के प्रति उद्दीपक प्रतिक्रियाएँ करना सीखता है।
- **उद्दीपन-अनुक्रिया अधिगम (Stimulus-Response Learning):** यह **थार्नडाइक** के 'संबंधवाद' तथा **स्किनर** के 'सक्रिय अधिगम' का रूप है। गेने ने इस अधिगम के अंतर्गत थार्नडाइक के 'प्रयास एवं भूल अधिगम' तथा स्किनर के 'कार्य अनुबंधन अधिगम' को रखा है।
- **शृंखला अधिगम (Chain Learning):** इस अधिगम में दो या दो से अधिक उद्दीपन-अनुक्रियाएँ आपसी समन्वय से एक शृंखला अधिगम का निर्माण करती हैं।
- **शाब्दिक साहचर्य अधिगम (Verbal Association Learning):** यह शृंखला अधिगम का ही एक प्रकार है। जब यह शृंखला शाब्दिक अभिव्यक्ति से संबंधित हो जाती है तो उसे शाब्दिक साहचर्य अधिगम कहते हैं, जैसे- शब्दावली सीखना, कहानी याद करना इत्यादि इस अधिगम के उदाहरण हैं।
- **विभेदन अधिगम (Discrimination Learning):** विभेदन अधिगम के अंतर्गत विद्यार्थी भिन्न-भिन्न उद्दीपनों के प्रति अनुकूलन से भिन्न-भिन्न स्पष्ट अनुक्रिया करना सीख जाता है। एक जैसे दिखने वाले उद्दीपनों में विभेद करने की क्षमता आ जाती है और बच्चा विभेदी उद्दीपन के अनुरूप अनुक्रिया करने में समर्थ हो जाता है, जैसे- बालक फुटबॉल और हॉकी में अंतर करना सीख जाता है।
- **संप्रत्यय अधिगम (Concept Learning):** जो अधिगम व्यक्ति में किसी वस्तु या घटना को एक वर्ग के रूप में अनुक्रिया करना संभव बनाते हैं, उन्हें 'संप्रत्यय अधिगम' कहते हैं। सर्वप्रथम **केंडलर** ने इसका उल्लेख किया था।
- **नियम अधिगम (Rule Learning):** नियम अथवा सिद्धांत अधिगम में विद्यार्थियों द्वारा विचारों का संयोजन किया जाता है। इस अधिगम में दो या अधिक संप्रत्ययों को शृंखलाबद्ध किया जाता है, जिससे एक नियम की संकल्पना का निर्माण होता है, जैसे- 'पृथ्वी में गुरुत्वाकर्षण शक्ति है।'
- **समस्या-समाधान अधिगम (Problem Solving Learning):** समस्या-समाधान अधिगम में नियम अधिगम का ही प्राकृतिक विस्तार होता है। नियम अधिगम के साथ-साथ विद्यार्थियों को अपनी मौलिकता का भी प्रयोग करना पड़ता है। इस प्रकार विद्यार्थी समस्या के समाधान तक पहुँचते हैं। इस अधिगम में चिंतन की सामग्री निहित होती है।

शिक्षण की आधारभूत आवश्यकताएँ (Basic Requirements of Teaching)

शिक्षण एक सामूहिक प्रक्रिया होती है, जिसमें विद्यार्थी और शिक्षक दोनों अपने-अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं। शिक्षण की आधारभूत आवश्यकता का केंद्रबिंदु अधिगम है। शिक्षण प्रक्रिया जब तक अपूर्ण रहेगी, जब तक अधिगम नहीं होगा। इस तथ्य को **रायबर्न** ने भी रेखांकित किया है। उन्होंने शिक्षण को त्रिध्रुवीय प्रक्रिया कहा है।

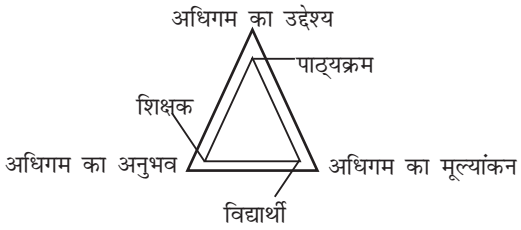

त्रिध्रुवीय प्रक्रिया

शिक्षण के चर (Variables in Teaching)

- शिक्षण के निम्नलिखित तीन चर हैं-
  1. **शिक्षक (स्वतंत्र चर):** शैक्षिक प्रक्रिया का आधारभूत तत्त्व शिक्षक ही होता है। शिक्षण प्रक्रिया को पूर्ण करने के लिये इसकी उपस्थिति अनिवार्य है। विद्यार्थियों को उनके उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता करता है।
  2. **विद्यार्थी (परतंत्र चर):** शिक्षण प्रक्रिया विद्यार्थियों की उपस्थिति के बिना संभव नहीं। विद्यार्थी, शिक्षक व पाठ्यक्रम के बीच सेतु का काम करता है।
  3. **पाठ्यक्रम (हस्तक्षेप चर):** विद्यार्थियों को क्या पढ़ाना और क्या सिखाना है, इन सभी बातों का निर्धारण पाठ्यक्रम से ही होता है। विद्यार्थियों के मध्य पाठ्यक्रम ही वह साधन है, जिसके माध्यम से उन्हें शिक्षा दी जाती है।
- **स्मिथ** के अनुसार- "शिक्षण एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा अधिगम की उत्पत्ति होती है।"
- **बर्टन** ने शिक्षण के अंतर्गत निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से अधिगम के मध्य संबंधों को बताया है-
  - शिक्षण + अधिगम = शिक्षा प्रभावशाली होगी
  - शिक्षण सोद्देश्य प्रक्रिया है। अत: उद्देश्यों को व्यावहारिक रूप में निर्धारित करके शिक्षण की ऐसी क्रियाओं की व्यवस्था की जा सकती है, जो अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन में सफल हो सके।
  - शिक्षण सिद्धांतों का प्रतिपादन अधिगम सिद्धांतों की सहायता से किया जा सकता है।
  - शिक्षण में मनोवैज्ञानिक तत्त्वों एवं शक्तियों का प्रयोग।
  - शिक्षण में दृश्य-श्रव्य सामग्री का उपयोग उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये।
- **गेज** ने शिक्षण को मनोवैज्ञानिक शक्तियों का केंद्रबिंदु कहा है। गेज के अनुसार शिक्षण का संबंध निम्न शक्तियों से है-
  - व्यवहार में परिवर्तन लाने वाली शक्तियाँ
  - शक्तियों के रूप में अधिगम परिस्थितियाँ
  - ज्ञानात्मक शक्तियाँ।

शिक्षण के कार्य (Functions of Teaching)

शिक्षण प्रक्रिया में स्वतंत्र और परतंत्र चरों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इन चरों के द्वारा निम्नलिखित कार्यों का संचालन किया जाता है–

- **निदानात्मक कार्य (Diagnostic Function) :** इस कार्य के अंतर्गत विद्यार्थी की समस्त परिस्थितियों का अवलोकन करके विशिष्ट प्रभावों पर ध्यान दिया जाता है। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों के न सीखने के कारणों का पता लगाया जाता है, साथ ही साथ शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों की कमज़ोरियों को दूर किया जाता है। इसके लिये शिक्षक निम्नलिखित कार्य करता है/निर्णय लेता है–
  - विद्यार्थी के पूर्व व्यवहार का निर्धारण करना
  - शिक्षण कार्य का विश्लेषण करना
  - अधिगम के संदर्भ में पाठ्यक्रम की विषयवस्तु का विश्लेषण करना
  - विद्यार्थियों में वैयक्तिक विभिन्नता संबंधी सूचना का संकलन करना
  - शिक्षण संबंधी समस्या का विश्लेषण करना।
- **उपचारात्मक कार्य (Therapeutic Function) :** इसके अंतर्गत विद्यार्थियों की कठिनाइयों का सामूहिक रूप से निवारण किया जाता है। शिक्षक और विद्यार्थी परस्पर निर्णय करके उचित शिक्षण युक्तियों का प्रयोग करते हैं। इसके अंतर्गत शिक्षक दो बातों पर विशेष रूप से ध्यान देते हैं–
  - शिक्षण कौशल को व्यवहार में लाना
  - पृष्ठ-पोषण प्रतिनिधियों की समुचित व्यवस्था करना।
- **मूल्यांकन कार्य (Evaluation Function) :** मूल्यांकन के अभाव में शिक्षण कार्य अपने उद्देश्य में सफल नहीं होता। अत: यह शिक्षण का आधार घटक है। यदि शिक्षण कार्य के उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं हो पाई तो शिक्षक का उपचार दोषरहित नहीं हो पाता।

Teaching Exams

❖ 641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, नई दिल्ली
❖ 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली
❖ C-171/2, ब्लॉक-A, सेक्टर-15, नोएडा, उत्तर प्रदेश-201301
❖ ताशकंद मार्ग, निकट-पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज
❖ मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर, राजस्थान
❖ 47/CC, बिल्डिंगटन आर्केड मॉल, बिल्डिंगटन चौराहा, विधानसभा मार्ग, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
❖ 12, मेन AB रोड, भँवर कुआँ, इंदौर, मध्य प्रदेश